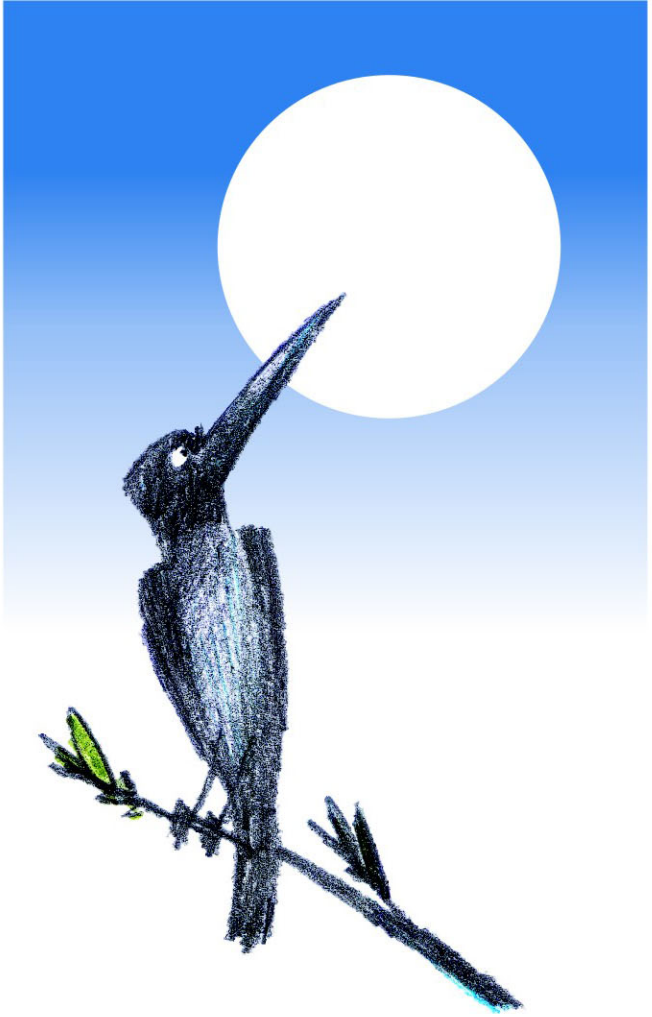

सुष्मिता बनर्जी

दो लज़ीज़ टुकड़े

लाडा और कौआ

एक काला कौआ था। उसने ऊपर देखा। दूर एक तारा चमक रहा था। कौए ने उस सुन्दर लाल तारे से कहा, "काओ..... काओ..... मेरे पास आओ। काओ..... काओ..... मेरे पास आओ।" तारा चमका टिमटिम। लाडा देख रही थी। वह कौए की बात समझ गई। उसने कौए को रोटी का टुकड़ा दिया। और तारे के लिए लाडा ने गाना गाया।

यहाँ सब ठीक है...

एक उद्योगपति ने देखा कि एक मछुआरा अपनी नाव के पास लेटे-लेटे गाना गा रहा था।

"तुम मछली क्यों नहीं पकड़ते?" उद्योगपति ने पूछा।

"क्योंकि आज के लिए जितनी चाहिए थी उतनी पकड़ ली हैं।"

"और क्यों नहीं पकड़ते?"

"क्या करूँगा उनका?"

"और पैसे कमाओगे। पैसे से तुम अपनी नाव में मोटर लगा सकते हो। फिर गहरे पानी में जाकर और मछलियाँ पकड़ सकते हो। इससे तुम्हें और पैसे मिलेंगे। तो तुम नायलॉन का जाल ले लेना। इससे ज़्यादा मछलियाँ पकड़ सकोगे। जल्दी ही तुम्हारे पास इतना पैसा हो जाएगा कि तुम एक क्या कई नावें खरीद सकोगे। तब तुम मेरे जैसे अमीर बन जाओगे।"

"फिर क्या करूँगा मैं?"

"तब तुम ज़िन्दगी के मज़े ले सकते हो।"

"तुम्हें क्या लगता है मैं अभी क्या कर रहा हूँ?" मछुआरा बोला।